भारतीय जैन संघटना

संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्षः **शांतीलाल मुथ्था**

सम्पर्क यात्रा–2020

SOCIAL SERVICE

SAP टेस्ट

EDUCATION

गुजरात भूकम्प

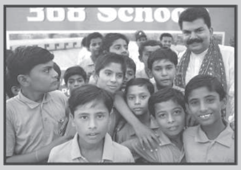

DISASTER MANAGEMENT

पार्श्वभूमि

भारतीय जैन संघटना (BJS) समाज कल्याण के प्रति समर्पित एक स्वयंसेवी संस्था है। यह अपनी तरह का एकमात्र अनूठा संगठन है जो अपनी विशिष्ट गतिविधियों के कारण से जाना जाता है। श्री. शांतिलाल मुथ्था, (जैन) पुणे ने जैन समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए इस संस्था की स्थापना 1985 में की।

भारतीय संस्कृति चिरकाल से अध्यात्म प्रधान संस्कृति रही है। इसकी दो पवित्र धाराएं प्राचीन काल से सतत शुचिता, सम्पन्नता और समृध्दि को प्रोत्साहित करनेवाली है। द्वितीय धारा आत्मिक गुणों का विकास और अंतरंग शुध्दता एवं आत्मलीनता पर विशेष बल देती है। ऐसी परम्पराओं एवं सिध्दान्तों पर चलने वाला शांतिप्रिय अहिंसावादी, व्यापार एवं उद्योगों में अग्रणी जैन समाज देश की जनसंख्या में केवल 0.4 प्रतिशत है लेकिन, व्यापार एवं उद्योगक्षेत्रमे उनका प्रभाव और अस्तित्व संपूर्ण भारतवर्ष मे विदित है।

जैन समाज के तेरह हजार से अधिक साधु–साध्वियाँ पांच महाव्रतों का पालन कर आत्म विकास का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। आपस में प्रेम, सद्भाव, अहिंसा, सत्य, अनेकांतवाद एवं अपरिग्रह का प्रचार एवं प्रसार करते हैं। हजारों स्थानीय संस्थाओं द्वारा गांवों एंव शहरों में स्थानक, मंदिर, उपाश्रय एवं भवनों जैसे स्थाई प्रकल्पों का निर्माण किया गया है। जैन समाज ने पूरे देश में लगभग 2500 से अधिक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की है तथा उन्हे योजनाबध्द तरीके से चला रहे हैं। जैन समाज व्यवसाय रत समाज हैं जो संपूर्ण देश में फैला हुआ है। सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक, नैतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में जैन समाज का इस देश में बहुत बड़ा योगदान है। इतनी सारी विशेषताओं के स्वामी जैन समाज की साधन–सामग्री, बुध्दि, कार्यकुशलता और साधु–साध्वियों के सहयोग से यदि सूझ–बूझ और नियोजन से अनेकों श्रेष्ठ एवं ऊंचे दर्जे के कार्यो द्वारा एक नई क्रांति लाई जा सकती है। इस दृष्टिकोण पर दृढ़ता पूर्वक विचार विमर्श करने के उपरान्त जैन समाज की अंतरंगी सामाजिक समस्याओं पर विचारणा कर ठोस एवं दृढ़ उपायों द्वारा सामाजिक, शैक्षणिक तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित एक नयी पीढ़ी तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित तरीके से करने के लिए BJS कृतसंकल्प है।

1) जैन समाज की विभिन्न समस्याओं को समझकर उन पर चिंतन एवं मनन कर आवश्यकता अनुसार संप्रदाय रहित नैतिकतापूर्ण कार्यक्रम कार्यान्वित करना।
2) देश की समस्त जैन शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त सरकारी शिक्षण संस्थाओं में दर्जेदार एवं उच्चस्तरीय शिक्षा के लिए कार्यप्रणाली का निर्माण कर क्रियान्वित करना। इसी आधार पर देशभर की सभी शैक्षणिक संस्थाओं में गुणवत्ता विकास का कार्य कर देश निर्माण के कार्य में जैन समाज के दायित्व का निर्वाह करना।
3) ‘परिवार के सर्वांगीण विकास’ के लिए सुनियोजित कार्यक्रम बनाना। इस कार्यक्रम का समाज के सभी सामाजिक, धार्मिक संस्थानों एवं साधु–साध्वियों के माध्यम से देशभर में प्रचार एवं प्रसार करना।
4) अहिंसा एवं नैतिक मूल्यों के आधार पर नया अभ्यासक्रम तैयार कर ज्यादा से ज्यादा स्कूलों मे कार्यान्वित करना। जिससे अगली पीढ़ी के लिए एक नई सोच मुखरित हो तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सके।
5) देश में होनेवाली प्राकृतिक आपदाओं के समय मदद एवं पुनर्वसन कार्य करना।

BJS अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं।

1) सामाजिक क्षेत्र (Social Service)
2) शैक्षणिक क्षेत्र (Educational)
3) प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन (Disaster Management)

गत 25 वर्षो में भारतीय जैन संघटना के माध्यम से उपयुर्क्त तीनो क्षेत्रों में अनेक कार्यों को रिसर्च कर कार्यान्वित करने हेतु पुणे के मुख्य कार्यालय में 150 से अधिक प्रोफेशनल्स नियुक्त किये हैं तथा देशभर में हजारों कार्यकर्ताओं के माध्यम से कड़ी मेहनत, अनुशासन, नियोजन, कुशलता, दूरदृष्टि, प्रोफेशनलिझम, तकनीकीकरण, नेटवर्किंग, आदि विशेषताओं के साथ पूरी आस्था एवं कड़े परिश्रम पूर्वक कार्य कर रहे है।

World Association of NGO (WANGO) यह विश्व की स्वयंसेवी संस्थाओं की फेडरल संस्था है। इस संस्था के माध्यम से BJS को 2005 में विश्व की सबसे अच्छी स्वयंसेवी संस्था का पुरस्कार प्रदान किया गया। केंद्र सरकार एवं कई राज्य सरकारों द्वारा समय समय पर BJS के कार्य की सराहना की गई है। यह जैन समाज के लिये गर्व कि बात है। आईये समाजोत्थान एवं देश निर्माण के इस यज्ञ में हम सभी अपना सहयोग प्रदान करें और कल्याणकारी योजनाओं में यथासंभव भागीदारी के लिए कृत संकल्प रहे।

परिचय सम्मेलन

प्लास्टिक सर्जरी

सम्पर्क यात्रा में उपस्थित जनसमुदाय

सामाजिक क्षेत्र SOCIAL SERVICE SOCIAL SERVICE SOCIAL SERVICE

BJS के माध्यम से पिछले 25 वर्षों से समाजोत्थान के कार्य किये जा रहे हैं। समाज कि समस्याओं को समझकर, उनका अध्ययन कर जनजागृति हेतु ठोस कदम उठाये जा रहे हैं। यह कार्य करने के लिए विषय की संपूर्ण जानकारी हासिल की जाती है और फिर खोजबीन करके उसके परिणाम, लम्बे समय तक होनेवाला असर तथा समाजोत्थान आदि बातों पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाता है। इन समस्याओं का हल तैयार कर समाज में जनजागृति पैदाकर सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने का कार्य किया जाता है। सामाजिक कार्य सम्बन्धी मूलप्रवृत्तियों के लिए आपसी सहयोग, मित्रतापूर्ण व्यवहार की भावना विकसित करना, रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा स्वाभाविक अभिरूचियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

सामूहिक विवाह

सन 80 के दशक मे विवाह का प्रश्न काफी गंभीर बन चुका था। दहेज की समस्या ने विकराल रूप धारण किया था। विवाह के खर्च बढ़ने लगे थे, सर्वसामान्य व्यक्ति के लिए अपने बेटी का विवाह करना यह जटिल समस्या बन गई थी। BJS ने काफी सोच समझकर इस समस्या से सर्वसामान्य लोगों को मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से सामूहिक विवाह की परिकल्पना समाज के सामने रखी। आरंभ में जैन समाज के सामूहिक विवाह सफलतापूर्वक करने के लिए BJS को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। जैन समाज का प्रथम सामूहिक विवाह 25 जोड़ों को लेकर 25 मई 1986 को पुणे में संपन्न हुआ। तत्पश्चात् आठ माह बाद 25 जनवरी 1987 में जैन समाज के 51 जोड़ों के सामूहिक विवाह किए गये। तबसे लेकर आज तक महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ इत्यादि कई राज्यों मे जैन समाज के सामूहिक विवाह लगातार किए जा रहे हैं और भरपूर सफलता इस कार्य में मिल रही हैं।

सामूहिक विवाह केवल जैन समाज ही नहीं बल्कि देश के सभी समाज की आवश्यकता थी। जैन समाज के कुछ सफल आयोजनों के बाद BJS ने पूरे महाराष्ट्र के कोने कोने में सभी जाति–धर्म में सामूहिक विवाह शुरू करने के लिए प्रयास किये और देखते ही देखते सभी जाति–धर्मो में सफलतापूर्वक सामूहिक विवाह किये जाने लगे। BJS के द्वारा शुरू किये इस कार्य ने शीघ्र ही एक सामाजिक आंदोलन का रूप धारण कर लिया हैं।

BJS के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री.शांतिलाल मुथ्था ने स्वयं अपने सुपुत्र – सुपुत्री एवं भतीजी का विवाह भी सामूहिक विवाह में किया। आज सामूहिक विवाह देशभर में हो रहे हैं। इस व्यवस्था से सर्वसामान्य जनता के करोड़ो रूपयों की बचत हो रही है और फिजूल खर्ची से बच रहे है। यह BJS की एक बड़ी सफलता मानी जाती है। 7 जनवरी 1989 के दिन पुणे में सभी जाति–धर्मो के 625 युगलों के सामूहिक विवाह आयोजित कर BJS ने देश के सामने मिसाल रखी।

वधु–वर परिचय सम्मेलन

सामूहिक विवाह करते समय विवाह तय करना कितना मुश्किल हो गया है, इस जानकारी से BJS अछूता नहीं रहा। अगर विवाह सही जगह तय नही हुआ तो तलाक की मात्रा में बढ़ोतरी होती है, घर की सुख, शांति और संतोष खत्म हो जाता है। उन्नति और प्रगति रूक जाती है।

यह समस्या लोगों को ज्यादा ग्रस रही थी, इस लिए काफी सोच विचार कर वधु–वर परिचय सम्मेलन का रास्ता ही इस समस्या का समाधान हो सकता है, इस विचार पर गौर करके BJS ने 1986 से जैन समाज के सभी संप्रदायों मे वधु–वर परिचय सम्मेलनों के सैंकडो आयोजन किये। इस से समाज को काफी राहत मिली और योग्य वधु के लिए योग्य वर ढूंढने मे या योग्य वर के लिए योग्य वधु ढूंढने के लिए लोगों की दृष्टि बदलने लगी, जो समाज के लिए काफी उपयोगी साबित हुई।

जैन समाज के साथ साथ सभी जाति–धर्मो मे परिचय सम्मेलन करने के लिए BJS के माध्यम से पूरा सहयोग प्रदान किया गया जो सबके लिए बहुतही लाभकारी बन गया।

लडकियों की घटती संख्यापर विशेष प्रयोग

भारतीय लोकसंख्या आयोग अनुसार पिछले 50 वर्षो से भारतभर में सभी जाति–धर्मो में नवजात शिशुओं में लड़कियों की संख्या घटती जा रही है। BJS ने इस विषय पर गंभीरता से विचार किया और कम से कम जैन समाज में यह घटती संख्या रोकने के लिए विशेष प्रयास शुरू किए। 7 जनवरी 1989 से लेकर पूरे महाराष्ट्र की पदयात्रा का आयोजन कर सभी गांवों, कस्बों और देहातो मे जाकर लडकियों की कम होनेवाली संख्या के परिणामों की जानकारी देकर, पूरे महाराष्ट्र में एक अभियान छेड़ा। इस पदयात्रा के माध्यम से एवं महाराष्ट्र के हजारो कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर, हर जिले में उन्हे दौरेपर भेजा और यह एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है इस बात की जानकारी लोगों तक पहुंचाकर उनके मतपरिवर्तन में सक्रिय रूप से प्रयास किया। BJS के माध्यम से 1993 में जैन समाज की जनगणना की गई थी। 2008 मे पुनःश्च एक बार 25000 परिवारों की जनगणना कर जैन समाज के 15 साल पहले के सेक्स रेशिओ और 2008 के सेक्स रेशिओ मे काफी बदलाव आए है।

BJS के माध्यम से 1993 मे किये सर्वे के अनुसार वैवाहिक उम्र कि लडकों के समक्ष प्रतिहजार लडकियों की संख्या 780 थी एवं 2008 मे किये सर्वे के अनुसार प्रतिहजार लडकों के समक्ष लडकियों की संख्या 1007 है। इस अनुमान से यह सिध्द होता है कि BJS के प्रयासों से महाराष्ट्र में जैन समाज के वैवाहि समतल मे वृध्दि हुई है। यह BJS की एक बडी कामयाबी मानी जाती है।

युवतियों का सक्षमीकरण

फन क्लब

युवकों का सक्षमीकरण

SOCIAL SERVICE SOCIAL SERVICE SOCIAL SERVICE SOCIAL SERVICE

युवतियों का सक्षमीकरण

Empowerment of Girls - (EOG)

आज जैन समाज की युवतियों के सामने बडी समस्या है, बढ़ता हुआ जनरेशन गैप, खराब होता जा रहा कॉलेज का वातावरण, टी.वी. चैनलों के दुष्परिणाम, पाश्चात्य संस्कृतिकी मार, बढ़ते तलाक, लड़के–लड़कियों में शिक्षा का अंतर, टेक्नॉलॉजी के दुष्परिणाम एवं कम उम्र में दूसरे समाज के लडकों के साथ पलायन कर शादी करने की प्रवृत्ति आदि अनेक समस्यायों के चक्रव्यूह में आज की युवतियां घिर गई हैं। इन सारी समस्यायों का डटकर मुकाबला करने के लिए हमारी लड़कियों को ट्रेनिंग देना, इस समस्याओं का सामना करने हेतू सक्षम करना ताकि वे अपने जीवन में सही मायने समझ सकें। इस लिए EOG यह 32 घंटे का सर्टिफिकेट कोर्स BJS द्वारा बनाया गया। इस के लिए दर्जनो ट्रेनर्स को 5 दिन का प्रशिक्षण देकर देशभर मे उनका जाल फैलाया गया है। हजारों लड़कियों ने एवं माता–पिताओं ने संतोष व्यक्त किया है कि यह कोर्स करने के बाद उनके विचारों मे काफी परिवर्तन आया, जो उन्हे अपना अच्छा बुरा सोचने समझने की नयी दृष्टि प्रदान करता है। न केवल जैन समाज के लिए बल्कि इस देश की सभी लड़कियों के लिए यह कोर्स काफी महत्वपूर्ण है। इसको पूरे भारतवर्ष मे ज्यादा से ज्यादा जगह पर फैलाना यह BJS का उद्देश्य है। ताकि आज की लड़किया जो कल पत्नी, गृहणी, मांता का दायित्व निभाने के लिए पूरी सक्षम रह पायेगी।

Student Assessment Programme (SAP)

पिछले 10–15 वर्षो मे देश मे और विश्व में बहुत परिवर्तन हुए है। कम्प्युटर एवं इंटरनेट के आगमन की वजह से शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आई हैं। जैन समाज ज्यादा से ज्यादा व्यवसाय में लगा होने की वजह से हम बच्चों को ज्यादा पढ़ाना पसंद नहीं करते थे, अर्थात उन्हें व्यापार में लगा देते हैं। लेकिन बदलते समयानुसार बच्चों की पढाई का महत्व ज्यादा बढ़ गया है, शिक्षा के क्षेत्र मे विभिन्न नये नये आयाम खुलने की वजह से, अभिभावकों को भी इसकी जानकारी न होने के कारण हमारे बच्चों मे काफी काबलियत होने के बावजूद भी उनकी योग्यता को समझने का कोई साधन हमारे पास नही है। इस वजह से काफी सारी शैक्षणीक कठिनाईयों के दौर से बच्चों को गुजरना पड़ता है।

हमारे बच्चे ही हमारा भविष्य है, हमारा कल हैं। समाजहित की दृष्टि से अपने बच्चों की शैक्षणिक योग्यता को टटोलना यह हमारा कर्तव्य है। इस लिए BJS ने काफी रिसर्च करके आठवी और दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए Student Assessment Programme (SAP) नामक टेस्ट तैयार किया है। आठवीं व दसवीं कक्षा के पचास हजार से अधिक विद्यार्थियों का टेस्ट भारत वर्ष में BJS के माध्यम से किया गया है। इस टेस्ट के माध्यम से विद्यार्थियों की क्षमताएं सामने आ जाती है तथा उनके दुर्बल और मजबूत पक्ष उजागर हो जाते हैं। इसके माध्यम से विद्यार्थियों या अभिभावकों को अपने भविष्य के बारे मे निर्णय लेना काफी आसान हो गया है। जिन विद्यार्थियों का यह टेस्ट लिया गया है और उनके दिशानिर्देशन से इससे काफी फायदा हुआ है और वे आगे के सही निर्णय के लिए अपने को तैयार कर पाये हैं।

Career Guidance & Knowledge Kafe

विद्यार्थियों के टेस्ट लेने के बाद उनकी योग्यता नुसार उन्हे किस दिशा में आगे बढना है, उन्हे कौन–कौन से विषयों का चयन करना है इस विषय मे सभी विद्यार्थियों कों मार्गदर्शन करने हेतु Career Guidance प्रोग्राम तैयार कर के विभिन्न शहरों मे इम्प्लीमेंट कर रहे है। उसके साथ BJS के मुख्य कार्यालय में शिक्षा के क्षेत्र की सभी जानकारी एक ही जगहपर मिलने की दृष्टि से Knowledge Kafe नामक वेबसाईट तैयार की गया है। जिसमे विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र की सभी जानकारी मिल जाती है। जैसे की उनका एडमिशन कहाँ हो सकता है, जैन समाज के अल्पसंख्यक कॉलेज कहाँ कहाँ है, अलग अलग शिक्षा विभाग के लिए स्पॉनसरशिप कैसे मिल सकती है, बँकों से लोन कैसे मिल सकते है इत्यादि कई महत्वपूर्ण शिक्षा संबंधित जानकारी इस पोर्टलपर विद्यार्थीयों के लिए रखी गई है। जो उनके लिए बहुतही सहायक हो गई और सोचने–विचारने के कई पहलू खुल गये हैं।

प्लास्टिक सर्जरी कैम्प

स्वास्थ्य के क्षेत्र में BJS के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों में हेल्थ चेकअप कैम्प, जयपुर फुट कैम्प, मोतियाबिंदु शस्त्रक्रिया कैम्प, ब्लड डोनेशन कैम्प, हेल्थ अवेअरनेस कैम्प ऐसे कई प्रकार के कैम्प समाज के हित के लिए समय समय पर आयोजित किये जाते हैं। इसके साथ ही लगातार पिछले 20 वर्षो से प्लास्टिक सर्जरी कैम्प किये जा रहे हैं। छोटे–छोटे बच्चों के जन्म के बाद उनके ओंठ फटे रहते है, आँख मे तिरछापन रहता है, कुछ लोगों के शरीर पर दाग होते हैं। उसकी शल्यक्रिया बहुत खर्चीली होती है। इस लिए डॉ. शरदकुमार दीक्षित व उनके अमेरिका के अनुभवी चिकित्सकों के सहयोग से लगातार 20 वर्षो से 15 शहरों में BJS के माध्यम से प्लास्टिक सर्जरी कैम्प आयोजित किये जाते है। इसके माध्यम से अबतक एक लाख से अधिक लोगों की शल्यक्रिया सफलतापूर्वक कराई गई है। इस कार्य मे महाराष्ट्र सरकार की ओर से एक जी. आर. निकालकर हर साल सभी चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

परिवार का सर्वांगींण विकास

(Holistic Development of Family) HDF

भगवान महावीर का अनुयायी रहनेवाला यह जैन समाज पूरे भारतवर्ष में फैला हुआ है। तेरह हजार साधु–साध्वियां पैदल विहार करके भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, आपस में प्रेम और सद्भाव ऐसे महान सिध्दांतों का प्रचार व प्रसार करने के लिए देशभर विचरण करते हैं और विभिन्न स्थानोंपर चातुर्मास करते हैं। यह जैन समाज के लिए काफ़ी गौरव की बात है। इन साधु–साध्वियों के पुण्य कर्मो और प्रयासों से ही आज भी समाज में संस्कृति की धरोहर अभी तक बची हुई

कुकिंग क्लास

योगा

व्यक्तित्व विकास

है। जैन समाज सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, चिकित्सा, गोरक्षा एवं धार्मिक क्षेत्रों में साधु–साध्वियों की प्रेरणा और आशीर्वाद से अपनी सेवाएं दे रहा है। भारतवर्ष में पांच हजार से अधिक स्थानक भवन, मंदिर ट्रस्ट, उपाश्रयों के माध्यम से अलग अलग ट्रस्ट बनाकर विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की गई है। ऐसी संस्थाओं मे साधु–साध्वी चातुर्मास भी अच्छे ढंग से करते हैं। किंतु पिछले कुछ वर्षों मे जैन समाज की नई पीढ़ी का ऐसे धार्मिक स्थानों में आना कम होता जा रहा है। इसकी वजह से नई पीढी के संस्कारों में कमी आ रही है एवं उनके जीवन मूल्यों में बदलाव आ रहा है।

इस विषय को ध्यान में रखते हुए BJS ने अपने 25 साल के अनुभव से रिसर्च करके Holistic Development of Family (परिवार के सर्वांगींण विकास) के लिए प्रोग्राम की रूपरेखा तैयार की है। परिवार के हर व्यक्ति को जीवनभर अनेकों बातों की आवश्यकता पड़ती है, उन बातों का समावेश करते हुए अलग अलग आयु के लोगों के गुट बनाकर उनके लिए आवश्यक कार्यक्रमों का नियोजन किया गया। इन कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए विभिन्न क्षेत्र के लोकप्रिय, प्रतिष्ठित, प्रसिध्द और प्रवीण संकायो से संबंधित लोगों को बुलाकर व्याख्यान, क्लासेस, चर्चासत्र द्वारा चार माह की योजनायें तैयार की गई है। साधु–साध्वियों के चातुर्मास के कार्यक्रमों में जरा भी बदलाव किये बिना बचे हुये समय का उपयोग HDF के माध्यम से नियोजित किये गये सभी कार्यक्रम स्थानक एवं उपाश्रय मे कार्यान्वित करने का उपक्रम किया गया। उसका चार माह का विस्तृत कैलेण्डर तैयार किया गया।

पुणे के शिवाजीनगर क्षेत्र मे ''**वर्धमान प्रतिष्ठान**'' नामक एक नया स्थानक भवन का निर्माण हुआ है। उस में प्रीतिसुधाजी म. सा. एवं पंद्रह साध्विओं का चातुर्मास होनेवाला था। वर्धमान प्रतिष्ठानने BJS के तैयार किये HDF के कार्यक्रमों का सुचारू रूप से नियोजन करने का निर्णय लिया। महासतीजी को HDF की समस्त कार्यक्रमों की जानकारी देकर, उनकी पूर्ण सहमती ली गई। जुलाई से नवम्बर 2008 तक चातुर्मास के दरम्यान HDF की समस्त परियोजनाओं को काफी सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया। सभी आयुवर्ग के लोगों के लिए 367 घंटे के कार्यक्रमों का बड़ी ही खूबी से सुंदर एवं सुरूचिपूर्ण प्रयोग किया गया। चार माह में इन कार्यक्रमों के आयोजन से शिवाजीनगर के 7833 जैन सदस्यों ने इसका पूरा लाभ उठाया। इस HDF कार्यक्रम के वजह से सभी आयु के लोगों को स्थानक में आने की प्रेरणा मिली। स्थानक के साथ सभी लोगों को जोड़ने का प्रयास सफल रहा, समाज एकरूप हो गया। छोटे छोटे बच्चों ने जैनालॉजी के साथ–साथ कई नये कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी बुध्दिमता का विकास किया। स्कूल एवं कालेज में जानेवाले 15–25 वर्ष तक के बच्चों ने कई प्रोग्रामों में सहभाग लिया और अपनी कुशलता को निखारा। अपनी कार्यक्षमता को उन्होंने पहचाना और उनके नॉलेज को अपग्रेड करने का काम सही ढंग से हुआ। 25–40 वर्ष के प्रोफेशनल्स और व्यवसायिक लोगों को नई दिशाएं मिली, उनको नई दृष्टि मिली, कई कामयाब व्यवसायिक लोगों के माध्यम से काफी कुछ जानने एवं सीखने को मिला और अपनी योग्यता निखारने का अवसर मिला। दुनिया कें कोने कोने में व्यवसाय कैसे चल रहे हैं, और हम कैसे आगे बढ़ सकते है, इसकी जानकारी मिली। 25–40 वर्ष की महिलाओं के लिए सबसे ज्यादा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और सबसे ज्यादा महिलाओं ने सभी कार्यक्रमों में हिस्सा लिया था। 110 घंटे तक के प्रोग्राम्स इनके लिए आयोजित किये गये। अगर यह प्रोग्राम नहीं होते तो केवल टी. वी. देखते हुए महिलाएं अपना समय बिताती। इसके बजाय अच्छे और ज्ञानवर्धक, महत्वपूर्ण कार्य में उनका समय बीता, जिसका असर सभी परिवारों में निश्चित रूप से होगा, यह बड़ी सफलता है। वैसे ही 40 से अधिक उम्र के सभी लोगों के लिए भी 60 घंटो के प्रोग्राम्स आयोजित किये गये, जिसकी वजह से घरकी जनरेशन गैप कम हुइ तथा सामाजिक, धार्मिक और नैतिक क्षेत्र मे सुचारू रूप से कार्य को अग्रसर करने के लिए इन सभी कार्यक्रमों का उपयोग हुआ है।

यह सभी कार्यक्रमों का साध्विजीयों के सानिध्य में आयोजन से समाज में सही समस्या क्या है और समाज कौनसे दौर से गुजर रहा है इस बात की जानकारी मिली। सभी लोगो ने स्थानक की गतिविधियों से लाभ हुआ, इस बात को स्वीकार किया। स्थानक का उपयोग केवल धार्मिक कार्यों के लिए न करते हुये उसके साथ साथ विभिन्न सांस्कृतिक, कलात्मक, ज्ञानात्मक, नैतिक, सामाजिक, व्यवसायिक कार्यक्रमों जैसे विविध विषयों को भी किया जा सकता है इस बात की पुष्टि हुई। यह HDF Project चार माह में सफलतापूर्वक कार्यान्वित हुआ। चातुर्मास पूरा हुआ, महासतीजींका विहार हुआ, फिर भी अगला HDF चार माह का कैलेंडर तैयार करके वितरित किया गया और अब साधु–साध्वियों के बिना भी स्थानक में सभी प्रोग्राम समय समय पर चालू रहेंगे और पूरे वर्ष समाज के लोग स्थानक में आते रहेंगे ऐसा निर्णय लिया गया जो कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए एक मज़बूत कदम होगा। धर्म के साथ समाज के सभी लोगों को जोड़ने का सफल प्रयास और समाज की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए धर्म स्थान का उपयोग और उस में साधु–साध्वियों का सानिध्य और आर्शीवाद यह त्रिवेणी संगम समाज के लिए वरदान साबित होगा।

BJS द्वारा धर्मस्थान पर सफलतापूर्वक किया हुआ प्रयोग इसका Franchisee Model तैयार करके भारत के जैन समाज के सभी संप्रदायों के स्थानक एवं उपाश्रय ऐसे धार्मिक स्थलों पर धीरे–धीरे लागू करना और स्थायी स्वरूप प्रदान करना यह BJS का सपना है। इस दृष्टि से BJS के प्रयास शुरू हुये। 2010 मे कम से कम 10 जगहों पर इसे कार्यान्वित करने की परियोजनायें बनायी गयी है। जिन जिन स्थानकों या उपाश्रयों के ट्रस्ट बोर्ड यह प्रोग्राम अपने यहाँ करने की इच्छा रखते है वे मुख्य कार्यालय मे BJS के ट्रस्टी एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री. प्रफुल्ल पारख से संपर्क कर सकते हैं और अपनी कल्पना को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं।

अध्यापक प्रशिक्षण

Trustee Convention

Computer Education

शैक्षणिक क्षेत्र EDUCATIONAL WING EDUCATIONAL WING

जैन समाज कि देशभर मे 2500 शैक्षणिक संस्थाएं है। इन शैक्षणिक संस्थाओं का Federation of Jain Educational Institutes (FJEI) स्थापित किया गया है। इन सभी संस्थानों की गुणवत्ता विकास करने के लिए BJS Educational Quality Improvement Project (BJS-EDUQIP) यह योजना तैयार की गई। इस प्रोजेक्ट में उपयुक्त और उत्तम 15 से अधिक परियोजनाएं विकसित की गई। उदा. Trustee Empowerment Programme (TEP), School Accreditation and Support Programme (SASP), Management Development Programme (MDP), Teachers Training Programme (TTP), Student Assessment Programmes (SAP VIII & X), Knowledge Kafe (KK), School Administration Software (SS), Measuring Teacher Effectiveness Programme (MTEP), Principal Empowerment Programme, etc.

Federation of Jain Educational Institutes (FJEI)

अब तक जैन समाज के 300 से अधिक स्कूलों मे BJS-EDUQIP योजना का सफलतापूर्वक क्रियान्नवयन किया गया है। इसकी वजह से इन सभी शैक्षणिक संस्थाओं मे बदलाव आये है। यह BJS की एक बडी सफलता मानी जाती है।

BJS-EDUQIP कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाने और उन्हें विस्तार देने के समय जैन समाज की शैक्षणिक संस्थाओं के साथ साथ देशभर के सभी सरकारी स्कूलों में भी यह प्रोग्राम लागू किये जा सकते हैं, इस विचार को अहमियत देकर उसे विकसित किया गया है। जैन समाज की शैक्षणिक संस्थाओं के साथ साथ कई राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा चलाई गई सरकारी स्कूलों में भी इन योजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया है।

अंडमान–निकोबार

अंडमान–निकोबार के राज्यपाल के साथ दिनांक 18 जुलाई 2005 के एक समझौते के अंर्तगत 2005–2008 तक BJS-EDUQIP प्रोजेक्ट राज्य के सभी 400 स्कूलों को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया है। इन तीन वर्षों में राज्य के सभी स्कूलों के परिणाम में पिछले 50 सालों के तुलना मे सबसे ज्यादा परिवर्तन आये है। भारत के गृहमंत्री ने इस योजना के सफलता की जानकारी अपनी एक खास बैठक में सबको प्रदान की।

गोवा

अंडमान की सफलता के बाद गोवा सरकार ने BJS-EDUQIP की पूरी जानकारी लेकर गोवा राज्य मे 1700 स्कूलों मे गुणवत्ता विकास करने के लिए BJS के साथ 18 अप्रेल 2007 को एक समझौता किया और पिछले ढाई वर्ष से सभी स्कूलों में प्रोजेक्ट कार्यान्वित किये जा रहे हैं। 2010 तक गोवा के सभी सरकारी स्कूलों का गुणवत्ता विकास कार्यक्रम पूरा होगा।

जवाहर नवोदय विद्यालय समिति

केंद्र सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा भारत के सभी जिलों मे नवोदय विद्यालयों का निर्माण किया गया है। केंद्र सरकार ने BJS के साथ 26 जून 2007 को भारत के सभी जिलों मे चल रहे नवोदय विद्यालयों में इस प्रोजेक्ट को कार्यान्वित करने का निर्णय लिया। पिछले दो वर्षों से सभी विद्यालयों में यह प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है।

BJS ने पहले शैक्षणिक संस्थाओं के गुणवत्ता विकास के लिए काफी संशोधन कर नियोजित रूप से BJS-EDUQIP प्रोजेक्ट के अंतर्गत 15 से अधिक उपयुक्त और उत्तम प्रोग्राम्स तैयार कर, जैन समाज के शैक्षणिक संस्थाओं मे उसे लागू कर, तीन राज्यों की सभी सरकारी स्कूलों मे भी इस प्रोजेक्ट को सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। इस वर्ष से गुजरात सरकार की सभी 42,000 स्कुलो में गुणवत्ता का विकास करने हेतु MOU किया गया। तथा 2 जिल्हे भरुच एवं नर्मदा की सभी 2000 स्कुलो में BJS-EDUQIP शुरु किया। BJS इस कार्य को देश के सभी राज्यों मे एवं सभी सरकारी स्कूलों मे फैलाना चाहती है। किसी भी राज्य से बिना कोई मूल्य लिये निःस्वार्थ भाव से सेवा के तौर पर देशभर की दस लाख सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता विकास करना यह जैन समाज के द्वारा इस देश के प्रति सबसे बड़ा योगदान हो सकता है।

BHARATIYA JAIN SANGHATANA

लातूर भूकंप

वाघोली एज्युकेशनल रिहॅबिलिटेशन सेंटर

गुजरात भूकम्प

आपत्ती व्यवस्थापन

DISASTER MANAGEMENT

जैन समाज के विभिन्न संप्रदाय प्राकृतिक आपदाओं मसलन बाढ़, भूकम्प, सूखा आदि प्रभावित क्षेत्रों के विकास और पुनर्निर्माण के लिए सदा से सेवाभावी रहे हैं और कदम से कदम बढ़ाकर कल्याणकारी योजनाएं चलाने में अग्रणी स्थान रखते हैं। चूंकि सारे संप्रदाय के लोग अपने–अपने तरीके से अलग अलग कार्य करते हैं तो इस बात की पूर्ण जानकारी न तो समाज के पास होती है और न ही देश में इन बातों का आंकडा सबको पता होता हैं। यदि सारे संप्रदायों की इस कार्यशैली को एकजुट होकर आंका जाये तो ज्ञात होगा कि नैसर्गिक आपदा में सबसे ज्यादा कुशलतापूर्वक अच्छा नियोजित कार्य करके, देश के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। समाज की प्रत्येक इकाई महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। फलस्वरूप जैन समाज की छवि समूचे देश में फैल रही है और उसमें प्रचंड सफलता हासिल की है।

1992 – जातीय दंगे

बाबरी मस्जिद मुद्देपर 1992 मे पूरे देशभर मे हिंदू–मुस्लिम जातीय दंगे चल रहे थे। पहली बार देश के काफी शहरों में कर्फ्यू लगाया गया था। इस वजह से पूरे देश में काफी हिंसा की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई थी। भगवान महावीर के अनुयायी जैन समाज के माध्यम से हिंसा को रोककर शांति स्थापित करने के कार्य में पहल करनी चाहिए यह सोचकर BJS ने महाराष्ट मे पुणे से नागपुर एक भव्य शांतियात्रा का आयोजन किया गया। जिसमे हिंदू धर्मगुरू स्वामी चिदानंदजी, मुस्लिम मौलाना वैद्युद्दिनखान, जैन आचार्य सुशीलमुनिजी, पद्मभूषण अण्णा हजारे, पद्मभूषण गोविंदभाई श्रॉफ, तत्कालीन उच्च न्यायालय के न्यायधीश चंद्रशेखर धर्माधिकारी ऐसी देशभर की प्रतिष्ठित हस्तियों को अपने साथ लेकर पुणे से नागपुर शांतियात्रा का आयोजन किया गया। पूरे महाराष्ट्र मे शांति स्थापित करने के लिए यह शांतियात्रा काफी सफल रही। देशभर के अखबारों में एवं दूरदर्शन में इन प्रयासों की काफी सराहना की और देशभर में यह जानकारी लोगों तक पहुंची।

1993 – लातूर भूकंप

30 सितंबर 1993 महाराष्ट्र लातूर–उस्मानाबाद क्षेत्र मे भयंकर भूकम्प आया जिससे 50 से अधिक गांव प्रभावित हुए। हजारों लोगों को अपनी जिंदगी गंवानी पड़ी और हजारों बालक अनाथ हुये। BJS ने पहले दिन से ही रोज दस से पन्द्रह हजार लोगों का खाना बनाकर पीडित लोगों को दिया। उस समय के प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव ने BJS के कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की। यही पर विराम न लेते हुए BJS ने पहले हप्तेभर में निरीक्षण करके 1200 बच्चों की सूची बनाई जो भूकम्प में अनाथ एवं बेघर हुये थे। BJS ने इन सभी बच्चों को पुणे ले जाकर उनको स्नातक स्तर तक शिक्षित करने का इरादा फलीभूत किया। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शरदरावजी पवार ने इस प्रोजेक्ट को काफी ज्यादा सहयोग प्रदान किया। भूकम्प के केवल 21 दिन के अंदर ही 1200 अनाथ एवं असहाय बच्चों को शिक्षा के लिए BJS के माध्यम से पुणे लाया गया और इन्हे ग्रैज्युएट होने तक अर्थात् आठ साल तक पुणे मे रखकर उनकी शिक्षा–दीक्षा, आवास–निवास, भोजन–वस्त्र आदि सभी सुविधाओं के व्यवस्थापन में हिस्सा लेकर इस बड़े कार्य को सुचारू रूप से निभाया और उसमें सफलता हासिल की।

1993 – वाघोली एज्युकेशनल रिहॅबिलिटेशन सेंटर (WERC)

शैक्षणिक, शारीरिक और मानसिकता, विकलांगता को दूर करने के लिए समर्पित निकाय :–

लातूर–उस्मानाबाद के बच्चों को पुणे मे लाने के बाद पिंपरी में रखा गया। लेकिन BJS ने पुणे–अहमदनगर रोडपर 10 एकड़ जमीन खरीदी और वहा WERC का स्थायी प्रकल्प का निर्माण किया गया। जिसमे 10 एकड़ भूमि में स्कूल, कॉलेज, हॉस्टल, भोजनशाला और प्रशासनिक भवन के साथ तीन लाख स्के.फुट से अधिक भवन निर्माण किया गया। यह प्रकल्प आज भी काफी सफलतापूर्वक चल रहा है।

1996 – मेलघाट की कुपोषण समस्या

महाराष्ट्र मे विदर्भ के अमरावती जिले में मेलघाट क्षेत्र को भारत का सोमालीया माना जाता है। यहाँपर आदिवासी बस्ती की सधनना है और हर साल एक हजार से अधिक बालकों की कुपोषण से मृत्यु होती है। BJS के विदर्भ के कार्यकर्ताओं ने इस समस्या की जानकारी हासिल की और निर्णय लिया कि यहाँ के बच्चों को यदि इस क्षेत्र से बाहर ले जाकर उनकी अच्छी पढ़ाई लिखाई करवाकर, अच्छे संस्कार दिये गये और अच्छी दृष्टि देने का प्रयास किया तो यही बच्चे आगे चलकर इस स्थान के दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सकते है। इस दृष्टि को सामने रखकर BJS ने दिनांक 9 अगस्त 1997 को 312 आदिवासी बच्चों को पुणे में लाकर आठ साल तक अपने साथ रखा एवं शिक्षा के साथ अन्य सुविधायें प्रदान की। यही बच्चे आज पढ़लिखकर बड़े हुये हैं और अपने अपने क्षेत्र को विकसित करने में अपना योगदान दे रहे है।

1997 – जबलपुर भूकम्प

22 मई 1997 के जबलपुर भूकम्प मे BJS के लोगोने राहत कार्य किया और वहाँ से 50 अनाथ बच्चों को पढ़ाई के लिए पुणे लाया गया। उनके लिए हिंदी माध्यम के स्कूल में व्यवस्था कर उनकी शिक्षा BJS के माध्यम से पूरी की गई।

2001 – गुजरात भूकम्प

26 जनवरी 2001 को कच्छ मे देश का सबसे बडा भूकम्प आया। जिससे 500 से अधिक गांव पूरे की पूरे विध्वस्त हो गये थे। BJS ने दूसरे ही दिन से राहत कार्यों और बचाव कार्यों का सामखयारी में अपना कैम्प लगाकर रोज तीस हजार से अधिक लोगों को तीन माह तक दो वक्त का खाना बनाकर भोजन परोसा। यह अपने आप मे सबसे बड़ा कार्य BJS के माध्यम से किया गया। उसके साथ साथ वस्त्रों का वितरण, बर्तन वितरण जैसे काम भी किये गये।

अंडमान–निकोबार त्सुनामी

जम्मू–कश्मिर भूकम्प

बिहार बाढ

DISASTER MANAGEMENT

DISASTER MANAGEMENT

BJS के माध्यम से पूरे भूकम्प के एरिया का सर्वेक्षण किया गया। 515 गांवों में जो सरकारी स्कूलें धराशाही हो गयी थी वहाँ BJS ने काफी सोच समझकर इन सभी गांवों में Semi Permanent Prefabricated Structure की स्कूलों का निर्माण करने का निर्णय लिया गया। BJS के ट्रस्टी एवं महाराष्ट्र के भूतपूर्व मंत्री श्री सुरेशदादा जैन ने इस प्रोजेक्ट में पूरा सहयोग दिया और स्वयं उसके लिए तत्पर रहे। उन्होने BJS के कार्यकताओं के साथ बैठकर मात्र तीन माह में 368 स्कूलों की निर्माण का कार्य पूरा किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी एवं श्री लालकृष्ण अडवाणी की उपस्थिति में 368 स्कूल गुजरात सरकार के मुख्यमंत्री श्री केशुभाई पटेल को दिनांक 3 जून 2001 को मुख्य समारोह में दिये गये। मा. प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में और पत्रकार परिषद में जैन समाज के द्वारा किये हुये कार्य की प्रशंसा करते हुए समस्त देश को सम्बोधित करते हुए आभार प्रदर्शित किया।

2002 – अकोला बाढ

2002 में महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र अकोला भीषण अतिवृष्टि के कारण बाढ़ की चपेट आ गया। BJS ने सभी बाढ़ पीडितों की भोजन की व्यवस्था की और प्रभावित लोगों को रहने के लिए श्री. सुरेशदादा जैन नगर व श्री दीपचंद गार्डी नगर नामक दो Temporory Rehabilitation Center का निर्माण किया गया और पन्द्रह हजार लोगों की रहने की व्यवस्था की गई।

2004 – तमिलनाडु त्सुनामी

दिनांक 26 दिसंबर 2004 को जो त्सुनामी आयी उसने तमिलनाडु के जनजीवन को तहस नहस कर दिया। तमिलनाडु के जैन समाज ने एक जुट होकर काफी सारे राहत कार्य किये। शिरकाली, चिदंबरम, कराईकाल, कुंबकोनम, कडलोर, इन क्षेत्रों मे कार्य करके काफी सुविधाएं मुहैया करवाई।

2004 – अंडमान–निकोबार त्सुनामी

BJS ने अंडमान–निकोबार जाकर वहाँ के त्सुनामी क्षेत्र का दौरा कर इस क्षेत्र मे काफी कार्य करने का निर्णय लिया। तत्कालीन राज्यपाल एवं केन्द्रीय मंत्री श्री शरदराव पवार के साथ बैठक की। अंडमान–निकोबार के 34 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं उपकेंद्र त्सुनामी के कारण नष्ट हो गये थे।

BJS ने इन सभी केंद्रों का पुनर्वसन करके नये भवनों को सुविधाओं एवं औषधियों के साथ अंडमान की सरकार को सुपुर्द करने का निर्णय लिया। बहुत ज्यादा कठिनाईयों के बावजूद BJS ने मात्र एक साल में यह अत्याधिक कठिन काम आसानीसे कर दिखाया। इसके साथ 11 बड़ी स्कूलों का पुनः निर्माण करने का काम BJS ने अपने हाथ में लेकर इन दोनो कार्यो को एक साल में पूरा करके नैसर्गिक आपदा प्रबंधन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

Mandharadevi Temple Stampede January 2005

महाराष्ट्र के मांढरादेवी मंदिर मे 2005 में भीड के कारण काफी बड़ी भगदड़ मची। इस अफरातफरी के माहौल में कुछही घंटों मे BJS के कार्यकर्ता एवं डॉक्टर्स ने इस क्षेत्र में कार्य करके अपना बहुत बड़ा योगदान प्रदान किया।

2005 – महाराष्ट्र बाढ

दिनांक 26 जुलाई 2005 को मुंबई सहित पूरा महाराष्ट्र भीषण बाढ़ की विभीषिका से ग्रस्त हो गया था। BJS ने महाराष्ट्र के सभी जिलों मे इस बाढ़ मे राहत कार्य कर एक मिसाल कायम की। महाराष्ट्र के हर जिले के कार्यकर्ताओ नें काफी मेहनत एवं लगन से इस कार्य को पार लगाया। जैन समाज कितना कुछ कर सकता है इस बात की जानकारी उसके योगदान के कारण सर्वसाधारण तक पहुंची।

2005 – जम्मू–काश्मीर भूकम्प

2005 के अक्टूबर में जम्मू–काश्मीर में कड़ाके की सर्दी पड़ी। अक्टूबर में भीषण सर्दी से पीड़ित लोगों के आवास की समस्या काफी बढ़ चुकी थी। तत्कालीन गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल और जम्मू–काश्मीर के मुख्यमंत्री श्री गुलामनबी आजाद ने एवं सभी सदस्यों ने विचार विमर्ष कर इस कार्य में सहयोग देने की विनती की। BJS ने इसे स्वीकार कर NDMA के साथ दिनांक 9 नवम्बर 2005 को एक आपदा बचाव कार्य हेतु एक अभियान चलाया। जिसके अंर्तगत मात्र 30 दिन में जम्मू–काश्मीर में पन्द्रह हजार लोगों की रहने की व्यवस्था के लिए जितनी सामग्री की आवश्यकता थी उतना प्रीफैब्रकेटेड स्ट्रक्चर बनाकर जम्मू–काश्मीर सरकार को तीन विशेष रेलों के द्वारा सुपर्द करने का कार्य सही समय पर पूर्ण किया। मुख्यमंत्री ने अपने धन्यवाद पत्रकार परिषद के माध्यम से प्रेषित कर जैन समाज की सराहना की।

इसी समय काफी बच्चे अपने माता–पिता से बिछुड़ कर अनाथ हो गये। राज्य सरकार ने पूरे क्षेत्र का दौरा करके 500 बेघर हुए बच्चों को अपनी शिक्षा पूर्ण करने हेतु पुणें भेजने का निर्णय लिया। माननीय सोनिया गांधी ने अपने जन्मदिन के शुभ अवसर पर उन्हें हरी झण्डी दिखाकर पुणे के लिए विदा किया। बच्चे छः माह तक पुणें में रहे और छुट्टियों में जब वे वापस जम्मू–काश्मीर गये उस वक्त कुछ एनजीओं के माध्यम से जम्मू–काश्मीर क्षेत्र के उच्च न्यायालय में बच्चों को जम्मू–काश्मीर क्षेत्र से बाहर जाने के लिए रोक लगाई गयी। फलस्वरूप बच्चे वापस पुणें नही आ सके।

2008 – बिहार बाढ

2008 में बिहार की कोसी नदी में देश की सबसे भीषण और भयंकर बाढ़ से हजारों गांवों में तबाही मचा दी और पच्चीस लाख से ज्यादा लोग उससे प्रभावित हुए। इन लोगों को अलग अलग कैम्पों में रखा गया। बिहार में जाकर विषम परिस्थितियों में बाढ़ पीड़ितों को राहत कार्य से मुहैया करवाया गया। 100 दिन से अधिक लम्बे समय तक एक लाख से अधिक लोगों को चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाएं प्रदान कर एक महान अभियान BJS के माध्यम से सफलतापूर्वक किया गया।

Activities and Programmes of Bharatiya Jain Sanghatana (BJS)

Geographical Coverage

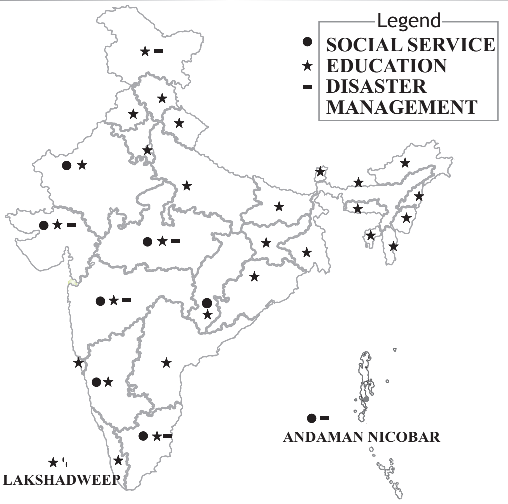

Educational Wing

Federation of Jain Educational Institutes (FJEI)

- A Federation of National Network of 1720 Jain Educational Institutes (JEI), spread across 12 states
- Covers 90% of Primary Educational Institutes & 10% of Higher Educational Institutes
- More than 80% JEI are in rural areas & less than 20% JEI are in urban areas

Coverage of BJS-EDUQIP

- At 328 schools of FJEI network
- At 400 schools of Andaman & Nicobar Islands
- At 1790 schools of Goa
- At 563 schools of Navodaya Vidyalaya Samiti (NVS)

मूल्यवर्धन....

....मूल्य ही अमूल्य है

- Covering total 167 schools in 110 villages of tehsil Patoda in district Beed

Educational Quality Improvement Project (BJS-EDUQIP)

Basket of Programs to assist schools & Institutes to upscale the Quality of Education.

- Trustee Empowerment Program (TEP)
- School Accreditation & Support Program (SASP)
- Management Development Program (MDP)
- Teachers Training Program (TTP)
- Principal Empowerment Program (PEP)
- Student Assessment Program (SAP) for Std. IV, VIII & X
- Knowledge Kafe (KK)
- School Administration Software Program (SS)
- Measuring Teacher Effectiveness Program (MTEP)
- And many more...

Social Service Wing

- Empowerment of Girls (EOG)
- Empowerment of Boys (EOB)
- Holistic Development of Family (HDF)
- Student Assessment Program (SAP) Std. IV, VIII & X
- Career Guidance
- Knowledge Kafe
- Yuvak Yuvati Parichaya Sammelan
- Janaganana Drive
- Mass Marriages
- Jain Family Court
- Felicitation of Teachers
- Felicitation of Jain Students
- Plastic Surgery Camps
- Computer Awareness Program
- And many more...

Disaster Management Wing

- **Communal Riots - 1992**
  Peace march from Pune to Nagpur with religious heads from Jain, Hindu and Muslim community
- **Latur Earthquake - 1993**
  Educational rehabilitation of 1200 boys from std. 5 to graduation
- **Melghat Malnutrition Project-1997**
  Educational rehabilitation of 350 boys for 10 years
- **Jabalpur Earthquake-1997**
  Educational rehabilitation of 50 boys
- **Gujarat Earthquake-2001**
  Constructed 368 Schools in just 90 days
- **Akola Floods -2002**
  Temporary shelters provided to 15,000 victims
- **Tsunami Tamil Nadu-2004**
  Rescue & Relief work through 6 camps
- **Tsunami Andaman & Nicobar Islands -2004**
  Constructed 11 School buildings & 34 Hospital buildings in just 1 year
- **Stampede at Mandhardevi temple, Maharashtra -2005**
  Timely relief & rescue activities
- **Maharashtra Floods-2005/2006**
  5000 household kits distributed to victims
- **Jammu &Kashmir Earthquake -2005**
  870 pre-fabricated shelters constructed in just 30 days to provide shelters to 1,500 people
- **Konkan floods-2006**
  Research & Development work
- **Bihar Floods-2008**
  Medical aid to 1,50,000 victims in 181 days
- **International Institute for Disaster Management (IIDM) proposed**
  Education on Disaster Prevention Research for preventive actions
  Empower for Handling Disasters

920.4.83/2009